ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-107-111**,YEAR-2015

महिलाओं की द्वंदात्मक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन
(कानपुर नगर एवं देहात के विशेष संदर्भ में)

❑ **शोधार्थिनी निधि सिंह**
❑❑ **डॉ0 निरपेन्द्र कुमार सिन्हा**

सारांश– *हमारी प्राचीन भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विषद वर्णन करने वाली ''मनुस्मृति'' की यह सूक्ति ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमते तत्र देवता'' । प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की उच्च स्थिति की ओर स्पष्ट रूप में संकेत करती है । जब नारी दृष्टिकोण से ऋग्वैदिक युग में महिलाओं के विकास का स्वर्ण युग था किन्तु दुर्भाग्य से आगे आने वाला समय महिलाओं के अनुकूल नहीं रहा और व्यक्तिगत सम्पत्ति की विचारधारा के विकास के साथ ही महिलाओं की स्वतंत्रता बाधित होती चली गई ।*

शारीरिक दुर्बलता, भरण–पोषण हेतु रोजी–रोटी कमाने की भूमिका पर पुरुषों का एकाधिकार बच्चों के पालन–पोषण में महिलाओं की जिम्मेदारी आदि वाली भूमिका ने महिलाओं को निर्भरता एवं परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ दिया । अब मनुस्मृति की वह सूक्ति प्रभावी हो गई जिसमें कहा गया है कि ''नारी को बचपन में पिता के द्वारा, युवावस्था में पति के द्वारा और वृद्धावस्था में पुत्रों के द्वारा रक्षा की जाती है'' अर्थात् स्त्री कभी स्वतंत्र नहीं होती ।

मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति और भी खराब हो गई । परदा प्रथा, बाल–विवाह, सती प्रथा, बहुविवाह तथा बालिका भ्रूणहत्या जैसी कुरीतियों के कारण महिलाओं की दशा निरंतर खराब होती चली गई। किन्तु अंग्रेजी शासनकाल में अनेक समाजसुधारकों ने अंग्रेज अधिकारियों के साथ मिलकर सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ नई सामाजिक चेतना जागृत की, आन्दोलन चलाये तथा अनेक सामाजिक विधानों (कानूनों) को लागू करवाया जिससे महिलाओं की स्थिति में सुधार हो सके ।

नई सामाजिक चेतना जागृत होने के कारण महिलाओं प्रति समाज में सकारात्मक सोच का विकास हुआ । औद्योगिक क्रान्ति के कारण भारतवर्ष में भी अनेक सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में परिवर्तन हुए तथा इन क्षेत्रों में महिलाओं का महत्व बढ़ा तथा वे घर की चाहरदीवारी से बाहर निकल कर पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करने लगीं । आज के दौर में उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है । महिलाओं की बहु भूमिकाओं ने उन पर निर्बलता का लगा ठप्पा हटा दिया तथा समाज में उनकी प्रतिष्ठा में वृद्वि हुई है और होती जा रही है । यही महिला सशक्तीकरण है । आज की शिक्षित तथा स्वावलम्बी नारी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर बराबर की भागीदारी निभा रही है । वे आज घर की चाहरदीवारी के अन्दर घुट–घुट कर भाग्य के भरोसे नहीं बैठी हैं और न ही यंत्रवत् (मशीन जैसी) कार्य करने वाली कठपुतली मात्र है बल्कि अज्ञानता के आवरण से निकल कर ज्ञान के आलोक में परिपूर्ण हो चुकी है और पुरुष प्रधान समाज में प्रतिस्पर्धा हेतु तत्पर खड़ी है । यही उसकी द्वन्दात्मक स्थिति है ।

अध्ययन के उद्देश्य –

महिलाओं की द्वंदात्मक स्थिति पर विचार करना आज के समय की मांग है क्योंकि आज जब हम महिला सशक्तीकरण की बात करते हैं तो महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक भूमिकाओं के सापेक्ष करते हैं । किन्तु क्या वास्तव में महिलाओं की भूमिका पुरुषों के बराबर हुई है ? क्या परिवार में वह पुरुष मुखिया की तरह अपना कार्य करती है ? यदि हाँ, तो वह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या आर्थिक भागीदारी तथा संसाधन तक उसकी (महिलाओं की)

❑ विषय – समाजशास्त्र भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान) भारत
❑❑ प्राचार्य– एस.एस. मेमोरियल महाविद्यालय, सुतियानी मोड़, ताखा, इटावा भारत

पहुंच कितनी है ? उक्त परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह जानना है कि –

1. कामकाज महिलाओं द्वारा पारिवारिक आय में महत्वपूर्ण योगदान देने पर उसकी पारिवारिक, आर्थिक स्थिति में पूर्व की अपेक्षा परिवर्तन आया है कि नहीं ।
2. अर्जित आय को अपनी इच्छानुसार व्यय करने की स्वतंत्रता रखती है या नहीं ।
3. परिवार में उसकी भूमिका को लेकर द्वंद की स्थिति है या नहीं ।
4. आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने पर सामाजिक स्थिति में पहले की अपेक्षा परिवर्तन आया है कि नहीं ।

सामाजिक एवं आर्थिक द्वंदात्मक स्थिति का विश्लेषण – देश की नवीनतम जनगणना 2011 के अनुसार जहाँ कुल आबादी 121.02 करोड़ आंकी गई वहीं इसमें महिलाओं की संख्या लगभग आधी अर्थात् 58.65 करोड़ आंकलित की गई है । साक्षरता के कुल 74.04 प्रतिशत भाग में महिलाओं की साक्षरता दर आजादी के 8.9 प्रतिशत से बढ़कर 65.46 प्रतिशत तक जा पहुँची है । इसीलिये राष्ट्र विकास के महान कार्य में महिलाओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता । वह घर हो या बाहर दोनों ही जगह अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ महिलाओं को हाशिये पर रख कर आर्थिक विकास संभव हुआ हो। महिलाओं को मुख्यधारा से जोड़े बिना समाज, देश अथवा राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विकास की कल्पना नहीं की जा सकती । इसीलिए दुनिया में विकास का एक आयाम ''महिला सशक्तीकरण'' को माना गया है तॉकि इस आधी आबादी का पूरा फायदा लिया जा सके।

किन्तु आज महिलाओं के सामने अपनी भूमिकाओं को लेकर एक द्वंदात्मक स्थिति बन गई है। घर पर बच्चों का पालन–पोषण, सास–ससुर की सेवा, पति को सहयोग इत्यादि तथा बाहर अर्थात् नौकरी में अपने साथियों के साथ ताल–मेल बनाना । बॉस या अधिकारी को संतुष्ट रखना तथा अपने कार्य को समय पर करना आदि आज की कामकाजी महिलाओं में द्वंद की स्थिति उत्पन्न कर रहा है । महिलाओं में यह द्वंदात्मक स्थिति उसकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति सम्बन्धी भूमिकाओं के कारण है ।

वर्तमान परिवेश में जीवन जीने के ढ़ंग में इतनी कठिनाईयां बढ़ती जा रही हैं कि परिवार को सही ढ़ंग में केवल एक व्यक्ति या पुरुष (पति) द्वारा अकेले संभव नहीं है । इसलिए परिवार की अर्थव्यवस्था में महिलाओं को आर्थिक सुदृढ़ता के लिए तथा कामकाज के लिए हिस्सेदार बनना आज के समय की मजबूरी बनती जा रही है । इसी कारण केवल शहर में रहने वाली महिलाओं की ही नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में रह रही महिलाओं में कार्य संस्कृति तेजी से फैली है । यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्र की लगभग 80 प्रतिशत महिलायें परिवार को आर्थिक सहायता देने के लिए अर्थोपार्जन में लगी हुई हैं । लेकिन विडम्बना यह है कि वर्तमान आर्थिक परिवेश में ग्रामीण समाज में लगभग 97 प्रतिशत महिलायें आज भी स्थिर अवस्था (जस की तस स्थिति) में हैं । इन महिलाओं के आर्थिक क्षेत्र भी सीमित हैं और संगठित क्षेत्रों में इनकी संख्या न के बराबर है । जिसका मुख्य कारण सामाजिक मान्यता व व्यवसायों का सामाजिक दायरे में बंधा होना है जो नवीन कार्यों की शुरुआत करने में अवरोध उत्पन्न करते हैं । शायद इसीलिए सरकार द्वारा तमाम योजनाओं, कार्यक्रमों, अधिनियमों एवं संवैधानिक उपक्रमों के क्रियान्वयन के बावजूद शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पूर्ववत् नहीं है । आज महिलाओं की स्थिति में जो कुछ भी परिवर्तन आया है वह नगरीय समाज तक ही सिमट कर रह गया है ।

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से उद्देश्य के अनुसार महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को ज्ञात करने के लिए सर्वेक्षित महिलाओं के कार्यरत रहने के कारण मासिक आय, अर्जित आय का इच्छानुसार व्यय करने की स्वतंत्रता, कार्यरत रहने के पूर्व पारिवारिक आर्थिक स्थिति, कार्यरत रहने के बाद पारिवारिक स्थिति, आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रति स्वयं का दृष्टिकोण, कार्यरत रहने के पूर्व समाज में स्थिति व कार्यरत रहने के बाद समाज की स्थिति को निम्न तालिकाओं द्वारा विश्लेषित किया जा सकता है –

तालिका संख्या – 1
कार्यरत रहने के कारण

क्रम सं.	कार्यरत रहने के कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	शौकिया तौर पर	25	12.50
2.	परिस्थितिवश	175	87.50
	योग	**200**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित ग्रामीण महिलाओं में ये 12.50 प्रतिशत शौकिया तौर पर, 87.50 प्रतिशत परिस्थितिवश कार्यरत है । ये महिलायें निम्न वर्ग से सम्बन्ध रखती हैं जो आर्थिक विपन्नता को कम करने, प्रति की अपर्याप्त आमदनी, में वृद्धि करने या फिर वर्तमान आर्थिक युग में बढ़ती हुई वस्तुओं की कीमतों, बच्चों की उच्च शिक्षा, उच्च जीवन स्तर आदि के लिए अर्थोपार्जन कर रही हैं जबकि कुछ ही महिलायें शौकियतौर पर अर्थोपार्जन कर रही हैं । ये महिलायें शहर के निकट वाले गांवों में निवास करती है जिससे कि इनकी मानसिकता भी शहरी महिलाओं की तरह हैं ।

तालिका संख्या – 2
मासिक आय

क्रम सं.	मासिक आय		उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	1000–3000		52	26.00
2.	3000–5000		55	27.50
3.	5000–7000		53	26.50
4.	7000–9000		25	12.50
5.	9000 से अधिक		15	7.50
	योग		**200**	**100.00**

उपरोक्त तालिका 2 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित महिलाओं में से 26.00 प्रतिशत महिलाओं की मासिक आय 1000–3000, 27.50 प्रतिशत 3000–5000 रुपये, 26.50 प्रतिशत 5000–7000, 12.50 प्रतिशत 7000–9000 रुपये के मध्य है सिर्फ 7.50 प्रतिशत की मासिक आय 9000 से अधिक है । जबकि अधिकांश ग्रामीण महिलायें 1000–3000 रुपये तक की आय प्राप्त करती हैं। जिसका मुख्य कारण अशिक्षा व सामाजिक मान्यताओं में बंधे व्यवसाय होना जिससे इन महिलाओं के पास अधिक आय प्राप्ति के कम विकल्प होते हैं ।

तालिका संख्या – 3
अर्जित आय को इच्छानुसार व्यय करने की स्वतंत्रता

क्रम सं.	अर्जित आय को इच्छानुसार व्यय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हॉ	85	42.50
2.	नहीं	115	57.50
	योग	**200**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित महिलाओं में से 42.50 प्रतिशत महिलायें अर्जित आय को इच्छानुसार व्यय करने में स्वतंत्र हैं जबकि 73. 5 प्रतिशत महिलाओं को यह स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है, क्योंकि उनके द्वारा अर्जित आय पर घर के मुखिया का हक होता है या फिर पति का गलत आदतों पर खर्च करना या फिर परिवार का बड़ा स्वरूप होने पर ये महिलायें चाहते हुए भी अर्जित आय को इच्छानुसार स्वतंत्ररूप से व्यय नहीं कर सकतीं ।

तालिका संख्या – 4
कार्यरत रहने के पूर्व पारिवारिक आर्थिक स्थिति

क्रम सं.	कार्यरत रहने के पूर्व पारिवारिक आर्थिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	अच्छी स्थिति	50	25.00
2.	सामान्य स्थिति	45	22.50
3.	खराब स्थिति	105	52.50
	योग	**200**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित महिलाओं के कार्यरत रहने के पूर्व 25.00 प्रतिशत की पारिवारिक आर्थिक स्थिति अच्छी, 22.50 प्रतिशत की सामान्य व 52.50 प्रतिशत की पारिवारिक आर्थिक स्थिति बुरी थी । लेकिन जब महिलाओं द्वारा पारिवारिक आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए अर्थोपार्जन किया जाता है तो परिवार की आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा सुधरने लगती है जिसे निम्न तालिका के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है ।

तालिका संख्या – 5
कार्यरत रहने के पश्चात् पारिवारिक आर्थिक स्थिति

क्रम सं.	कार्यरत रहने के बाद पारिवारिक अर्थिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	पहले से अच्छी	170	85.00
2.	पहले से ठीक–ठाक	28	14.00
3.	पहले जैसी	02	1.00
	योग	**200**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका 5 से स्पष्ट होता है कि 85.00 प्रतिशत महिलाओं की पारिवारिक आर्थिक स्थिति पहले से अच्छी है उनका जीवन स्तर भी उच्च बना है । 14. 00 प्रतिशत महिलाओं की पारिवारिक आर्थिक स्थिति पहले से ठीक–ठाक है । सिर्फ 1.00 प्रतिशत की आर्थिक स्थिति पहले जैसी ही लगती है जिसका कारण परिवार के सदस्यों की अधिक संख्या व परिवार के मुखिया का गलत आदतों में लिप्त होना है । लेकिन उपरोक्त समस्याओं के होने के बाद भी ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक आत्मनिर्भर होने के प्रति स्वयं के दृष्टिकोण में बदलाव आने लगा है ।

तालिका संख्या – 6
आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रति स्वयं का दृष्टिकोण

क्रम सं.	स्वयं का दृष्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	कार्यरत	196	98.00
2.	घरेलू	4	2.00
	योग	**200**	**100.00**

तालिका क्रमांक 6 से स्पष्ट है कि 98.00 प्रतिशत महिलायें कार्यरत रहना पसंद करती हैं । सिर्फ 2.00 प्रतिशत महिला घरेलू महिला बने रहना पसंद करती हैं जबकि अधिकांश महिलायें अशिक्षा के दोष को खत्म करने, सामाजिक बंधनों को कम करने, आर्थिक रूप से सशक्त होने के लिए कार्यरत रहना चाहती हैं ।

तालिका संख्या – 7
कार्यरत रहने से पूर्व समाज में स्थिति

क्रम सं.	कार्यरत रहने से पूर्व समाज में स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	उच्च स्थिति	14	7.00
2.	मध्यम स्थिति	76	38.00
3.	निम्न स्थिति	110	55.00
	योग	**200**	**100.00**

तालिका क्रमांक 7 से स्पष्ट होता है कि कार्यरत रहने से पूर्व 7.00 प्रतिशत महिलाओं की समाज में उच्च स्थिति थी। 38.00 प्रतिशत महिलाओं की सामान्य स्थिति थी । 55.00 प्रतिशत महिलाओं की निम्न स्थिति थी । लेकिन कार्यरत रहने के बाद उनकी सामाजिक स्थिति में कुछ सीमा तक बदलाव आने लगे हैं।

तालिका संख्या – 8
कार्यरत रहने पर समाज में स्थिति

क्रम सं.	कार्यरत रहने पर समाज में स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	उच्च स्थिति (पहले से अच्छी)	42	21.00
2.	मध्यम स्थिति (पहले से ठीक–ठाक)	98	49.00
3.	निम्न स्थिति (पहले जैसी)	60	30.00
	योग	**200**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका 8 से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में 21.00 प्रतिशत महिलाओं की सामाजिक स्थिति पहले से उच्च, 49.00 प्रतिशत की सामान्य व 30.00 प्रतिशत की सामाजिक स्थिति पहले जैसी थी वैसे ही है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हुए भी ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं आया। सर्वेक्षित महिलाओं में से सिर्फ 21. 00 प्रतिशत महिलायें जो शहर के निकट गांवों में निवास करती हैं जिनकी समाज में उच्च स्थिति है। इन महिलाओं में पर्दा प्रथा का प्रतिबन्ध भी कम हुआ है। लेकिन 30.00 प्रतिशत महिलाओं की निम्न स्थिति इस बात की ओर इंगित करती है कि परिवर्तन के इस दौर में ग्रामीण समाज अभी भी रूढ़िवादी बेड़ियों में जकड़ा है जो महिला जगत में होने वाली क्रान्ति को नहीं स्वीकारना चाहते ।

*****